fnukd 30 uoEcj dk UNICEF }kjk XISS e vk;kftr dk;Øe e ekuuh;k jkT;iky egkn;k dk vfHkHkk"k.k

UNICEF की 70वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में भाग लेते हुए प्रसन्नता हो रही है।

आज UNICEF द्वारा Jharkhand Development Dialogue Lecture Series के तहत आयोजित कार्यक्रम की Theme "Reaching the Unreached : A March Towards Sustainable Development Goals 2030'' रखा गया है। यह कार्यक्रम बच्चों से जुड़े मुद्दों एवं उसके समाधान पर चर्चा करने का अवसर प्रदान करता है।

बच्चों का सर्वांगींण विकास हो, उन्हें पोषण सुविधायें प्राप्त हो, इस ओर सभी प्रयासरत है। Sustainable Development Goals के तहत सभी बच्चों को अपने जीवन में विकास के लिए समान अवसर सुलभ हो, खासकर, कमजोर और वंचित वर्ग के बच्चों का सामाजिक उन्नयन हो ताकि वे विकास की राह में कहीं पीछे नहीं रहे। यह सर्वविदित है कि बच्चे अपने जीवन की शुरूआत असमानता वाले वातावरण में करते हैं। जहाँ एक ओर कुछ बच्चों के पास बहुत सारी सुविधाएं होती हैं और दूसरी ओर कुछ बच्चों के पास इसका अभाव रहा है, जो एक बहुत बड़ा दूराव और अंतर पैदा करता है। इस असमानता के कारण बच्चों के जीवन, स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

हालांकि बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने, उनकी शिक्षा और गरीबी उन्मूलन की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। शिशु मृत्यु—दर में कमी आई है, बालक और बालिकायें school जाने हेतु प्रेरित हो रहे हैं। उनमें शिक्षा के प्रति जागरूकता आ

रही है। लेकिन अभी भी कई चुनौतियाँ हमारे समक्ष है, जिसमें कुपोषण की एक गंभीर समस्या सामने है। यह असमानता न केवल नैतिक रूप से अनुचित है, बल्कि यह आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति में भी बाधक है। सरकार द्वारा किये जा रहे कार्य के अतिरिक्त सम्मिलित प्रयासों से ही इस खाई को पाट सकते हैं।

बच्चों के जीवन में पोषण दो चरणों में पूर्ण होता है। पहले चरण के अन्तर्गत बच्चे के जन्म के पहले 1000 दिन, यानि गर्भावस्था से लेकर 2 साल पूरे होने तक। यह वह अवधि होती है, जिस दौरान बच्चे के स्वास्थ्य, पोषण और विकास की आधारशिला तैयार होती है। यदि इस 1000 दिन के दौरान बच्चे को सही पोषण और देख–भाल नहीं मिले तो उसका परिणाम बच्चे के खराब स्वास्थ्य, कुपोषण और समय से पूर्व मृत्यु के रूप में सामने आता है। इसके दूसरे चरण के अन्तर्गत किशोरावस्था, जब बच्चे में शारीरिक और मानसिक रूप से परिवर्तन हो रहा होता है। परिवर्तन के इस काल में बच्चों को विशेष देख–भाल और संरक्षण की आवश्यकता होती है। हम जानते हैं कि बच्चों के मस्तिष्क का ठोस विकास किशोरावस्था के शुरूआती दौर में ही होता है, भावनात्मक स्तर पर भी बच्चों में इसी अवधि में परिवर्तन देखे जाते हैं। यही वह समय होता है, जब बच्चे अधिक जिम्मेवारियां लेने लगते हैं, नए–नए प्रयोग करना शुरू करते हैं और खुद के लिए अधिक स्वतंत्रता चाहते हैं। इस दौरान बच्चे जो मूल्य या कौशल सीखते हैं, वह उनके पूरे जीवन को प्रभावित करता है। अतः यही वह अवस्था जिसमें बच्चों की दिशायें तय होती है।

यह सर्वविदित है कि जब किशोर–किशोरियों की अच्छी देख–रेख और परवरिश की जाती है, उनकी जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है, नीतियों और सेवाओं में उनकी जरूरतों का ध्यान रखा जाता है, तो गरीबी, भेद–भाव और हिंसा के चक्र को तोडना संभव है। सरकार के साथ–साथ विभिन्न सामाजिक संगठनों, औद्योगिक प्रबंधनों, मीडिया और अंतरराष्ट्रीय संगठनों को वंचित बच्चों के हित में एक साथ आकर इस दिशा में सम्मिलित प्रयास करने की आवश्यकता है।

बच्चे देश के भविष्य होते हैं और इस भविष्य को सवाँरने की दिशा में यह लेक्चरसीरिज इस परिप्रेक्ष्य में अधूरा कहा जा सकता है कि बच्चों के भविष्य निर्माण की जिम्मेदारी केवल महिला एवं बाल विकास विभाग तक ही सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों के विकास से जुड़े सभी विभाग एवं संगठन को एकत्रित भाव के साथ आना चाहिये और चर्चा होनी चाहिये। यह गौरतलब है कि किसी गरीब घर में यदि कोई सुन्दर दिखनेवाली लड़की होती है तो उसकी सुन्दरता भी अभिशाप बन जाती है। ऐसे भी लोग हैं जो अपने बेटी को अधिक नहीं पढ़ाना चाहते, इसका कारण पूछने पर बताते हैं कि यदि अधिक पढ़ायेंगे तो इसकी शादी के लिए भी अधिक पढ़ा–लिखा लड़का खोजना होगा। आज बच्चे ट्रेफिकिंग के शिकार क्यों है, बाल–मजदूरी करने के लिए विवश क्यों है, इस पर मन्थन करना होगा और इस समस्या के निदान हेतु एकजुट होकर कार्य करना होगा। बच्चे गरीब नहीं होते, परिस्थितियाँ गरीब होती है। इन सबके निदान हेतु लोगों को समाजिक दायित्व के तहत कार्य करना होगा। वैसे भी खुद

के लिए जियें तो क्या जियें, दूसरों के लिए जीने से ही इन्सान महान बनता है।

अन्त में, बच्चों के अधिकारों और उनके लिए समानतापूर्ण वातावरण के निर्माण के लिए, इस बिंदु पर सभी का ध्यान आकृष्ट करने हेतु मैं UNICEF को बधाई देना चाहती हूँ। इस दिशा में UNICEF, सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों एवं पूरे प्रशासनिक तंत्र का आह्वान करते हुए कहना चाहूँगी कि वे इस राह में समग्र प्रयास से आगे बढ़ें और राष्ट्र की प्रगति में सार्थक व बहुमूल्य योगदान दें।

जय हिन्द्! जय झारखण्ड!